नंदक नंदक कदंबक तरुतर धिरे - दिरे मुरलि बजाव ।
समय संकेत - निकेतन बइसल बेरि - बेरि बोलि पठाव ॥
सामरि, तोरा लगि अनुखन बिकल मुरारि ।
जमुनाक तिर उपत्रन उदवेगल फिरि फिरि ततहि निहारि ॥
गोरस बेचए अवइत जाइत जनि जनि पुछ बनमारि ।
तोंहे मतिमान सुमति मधुसूदन बचन सुनह किछु मोरा ॥
भनइ विद्यापति सुन बरजौवति बंदह नंदकिसोरा ॥

देख देख राधा रूप अपार ।
अपुरव के बिहि आन मिलाओल खितितल लावनिसार ॥
अंगहि अंग अनंग मुरछायत हेरए पड़ए अथीर ।
मनमथ कोटि मथन करु जे जन से हेरि मंहि - मधि गीर ॥
कत - कत लेखिमी चरत तल ने ओछए, रंगिनि हेरि बिभोरि ।
करु अभिलाख मनहि पदपंकज, अहोनिसि कोर अगोरि ॥

कामिनि करए सनाने ।
हेरतहि हृदय हनए पंचबाने ॥
चिकुर गरए जलधारा ।
जनि मुख - ससि डर रोअए अँधारा ॥

कुच जुग चारु चकेवा ।
निअ कुल मिलिअ आनि कोन देवा ॥
ते संका भुज पासे ।
बाँधि धएल उड़ि जाएत अंकासे ॥

पाठ - 1

(क) विद्यापति - पदावली

जीवनवृत्तः पिता गणपति ठाकुर के साथ मिथिला के अतिक राय गणेश्वर के दरवार में भवेश कीर्तिसिंह क लेखन कांव। राजा शिवसिंह तथा उनकी पत्नी लखिमादेवी के अनन्य कृपापात्र और सहचर। 'अभिनव जयदेव' को उपाथि ने अलंकृत।

सौंदर्य और प्रेम के उन्मत्त नायक, लोकजीवन के सरस चितेरे वहूभाषाविद् कवि और समाज - द्रष्टा।

रचनाएँ संस्कृत - भू - परिक्रमा पुरुष परीक्षा, लिखनावलो, शैवसर्वस्वसार, गंगा - वाक्यावली, विभागंसार, दानवाक्यावली, दुर्गाभत्तितरंगिणी, गंयापत्तलक और वर्षकृत्य। अवहठ्ठ - कीर्तिलता, कीर्तिपताका और मैथिली - पदावली।

पदावली

भल हर भल हरि भल तुअ कला। खन पतबसन खनहि बघछला ॥
खन पं वानन खन भुज चारि । खन संकर खन देव मुरारि ॥
खन गोकुल भए चराइअ गांय। खन भिखि माँगिए इमरु बजाय ॥
खन गोविंद भए लिअ महादान । खनहि भसम भरि आँ ओ कान ॥
एक सरीर लेल दुइ बास । खन बैकुंठ खनहि कैलास ॥
भनइ विद्यापति विपरित वानि । ओ नारायन ओ सूलपानि ॥

जय जय भैरबि असुर भयाउनि, पसुपति भामिनि माया ।
सहज सुमति बर दिअओ गोसांउनि, अनुगति गति तुअ पाया ॥
बासर - रैनि सबांसन सोभित चरन चंद्रमणि चूड़ा ।
कतओक दैत्य मारि मुहँ मेलल कतओ उगलि कैल कूड़ा ॥
सामर बरन नयंन अनुरंजित जलद जोग फुल कोका ।
कट कट विकट ओठपुट पाँड़रि, लिधुर - फेन उठ फोका ॥
घन - घन घनए घुघुर कत बाजए हन हन कर तुअ काता ।
विद्यापति कबि तुअ पद सेवक पुत्र बिसरु जनि माता ॥

आई उघरि प्रीति कलई सी जैसे खाटी आमी।
सूर इते पर अनख मरति हैं, ऊधो पीवति मामी॥

(अथवा)

(2) अगुन सगुन दुइ ब्रहत सरुपा। अकय अगाध अनादि अनुपा॥
मोरे मत बड़े नामु दुहू तें। किए जेहिं जुग निज बस नज बुते॥
प्रोढि सुजन जनि जानहि जन की। कहऊँ प्रतीति प्रीति रुचि मन की॥
एकु दासगत देखिऊ एकू। पावक सम जुग ब्रहत राम तें॥

(d) (1) ऊजो तद्यौना ही रहयो, श्रुति सेवत इक अंग।
नाक-बास बेसरि लहयो, परि मुकुतनु के संग॥

(अथवा)

(2) आसा गुन बांधि कै भरौसो-सिल धरि छाती,
पूरे पन-सिंधु मैं नबूड़ता सकाय हौं।
दुख-दवहिय जारि, अंतर उदेग आंचि,
रोम रोम त्रासनि निरंतर तनाय हौं।

2. पठित काव्यांश के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि विभापित श्रृंगार कवि हैं या भक्तिकवि ?(17)
3. पृथ्वीराज रासो के पद्मावती समय की वस्तु चेतना को स्पष्ट कीजिए। (17)
4. कबीर के काव्य में व्यंजित सामाजिक चेतना की समीक्षा कीजिए। (17)
5. पद्मावत के मानसरोदक खंड का सारांश प्रस्तुत कीजिए। (17)
6. भ्रमरगीत प्रसंग के आधार पर सूर की भक्ति भावना की समीक्षा कीजिए। (17)
7. तुलसीदास की राम भक्ति का विवेचन कीजिए। (17)
8. हिन्दी सतसई परंपरा का परिचय देते हुए उसमें बिहारी के स्थान को निर्धारित कीजिए। (17)
9. घनानंद के काव्य के काव्य-सौष्टव की समीक्षा कीजिए। (17)
10. निम्नलिखित में से तीन की समीक्षा कीजिए। (17)
    (1) देख देख राधा रूप उपार।
    (2) जो जन बिछुरै राम सूँ तेदिव मिले न राति।
    (3) नले अग्गि तेजी जुतने तुषार।
    (4) गिरिवर घरि गोधन चारि, बंदावन-अभिलाषी।
    (5) भए न केते जगत के चतुर चितेरे कूर।

प्र.1. मानसरोदक खण्ड का सारांश लिखिए।

रूपरेखा :-

1. प्रस्तावना
2. अनुपम रूप - लावण्य
3. तत्कालीन समाज की बधुओं की परतंत्र स्थिति
4. पद्मावती का पारमात्मिक रूप
5. उपसंहार

1. प्रस्तावनाः-

मानसरोदक खण्ड की रचना सूफी महान कवि मलिक महम्मद जायसी ने की थी। प्रेम - पीर के सच्चे साधक जायसी ने पद्मावत काव्य में लौकिक प्रेम के द्वारा अलैकिक प्रेम का निरूपण किया है। इस काव्य में नायिका पद्मावती परमात्मा की प्रतीक है। उसके व्यक्तित्व एवं सौंदर्यसत्ता एवं सौंदर्य का इतने व्यापक रूप में चित्रण किया गया है कि जिससे किसी अनंत सौंदर्य - सत्ता के रूप में आभास होने लगता हैं। ज़ायसी का रहस्यवाद मूलतः भारतीय अद्वैत भावना पर अश्रित है।

गंधर्वसेन राजा की रानी चम्पावती के गर्भ से पद्मावती का जन्म होता है। कन्या राशि में उत्पन्न होने से उनका नाम पदमावती रखा गया। इस काव्य में पद्मावती रूप वर्णन के साथ - साथ में पारमात्मिक तन्त्व भी बताया गया है। 'पद्मावत' प्रेममार्गी विचारधारा का काव्य है।

2. अनुपम रूप - लावण्यः-

किसी पूनम के दिन पद्मावती मानसरोवर में स्नान करने के लिए अपनी सब सखियों के साथ निकलती है, मानो समस्त फुलवारी ही निकलती है। वे सब मालती रूप पद्मावती के साथ ऐसे चलीं मानो कमल के साथ कुमुदिनी हो। उनकी सुगन्धि की व्यापकता के कारण गंधर्व के समूह भी प्रभावित हो रहे थे।

"भेली सबै मालनि संग फूले केवल कमोद।
बेधि रहे गन गंध्रप बास परिमलामोद।"

पद्मिनी की सखियों ने सरोवर के किनारे अपने जूडे खोलकर बालों को फैला दिया। पद्मावती का मुख चन्द्रमा के समान है और शरीर मलयाचल की भाँति है। उस पर बिखरे हुए बाल ऐसे हैं जैसे सर्पों ने सुगन्धि के लिए इसे ढक लिया हो या फिर ये बाल मानो मेध ही उमड़ आये हैं जिससे सारे संसार में छाया हो गई। लहराते बाल ऐसे लगते हैं कि चन्द्रमा को ढक लिया है। केश इतने

घने और काले हैं कि दिन होते हुए भी सूर्य का प्रकाश छिप गया, और चद्रमा रात में नक्षत्रों को लेकर प्रकट हो गया। चकोर आकाश में चंद्रमा और धरती पर विराजमान चद्रमाँ को देखकर घबरा गयी। पद्मावती के दाँत बिजली जैसे चमकीले थे और वह कोयल की तरह मधुर भाषिणी थी। भौंहें ऐसी थीं जैसे आकाश में इंद्रधनुष हो। नेत्र क्या थे मानो दो खंजन के पक्षी क्रीड़ा कर रहे हों।

मानसरोवर उसके रूप को देखकर मोहित हो गया और इस बहाने से लहरें ले रहा कि किसी तरह पदंमावती के पैर छू सके।

3. तत्कालीन समाज की बधुओं की परतंत्र स्थितिः-

सरोवर में स्नान करते समय या सब खेलती हुई सब सहेलियाँ पद्मावती से कहती हैं - हे रानी! मन में विचार करके देख लो। इस पीहर में चार दिन ही रहना है। जब तक पिता का राज्य है तभी तक खेल लो जैसा कि आज फिर हमारा ससुराल जाने का समय आ जाएगा, तो फिर न जाने हम कहाँ होंगे और कहाँ यह तालाब और इसका किनारा होगा ? और मिलकरके साथ खेल न पायेंगे। सास और ननद बोलते ही प्राण ले लेंगी। ससुर बडा कठोर होगा। वह आने भी नहीं देगा। न जाने प्रियतम कैसा व्यवहार करेगा।

"पिउ पिआर सब ऊपर सो पुनि करै देह काह।

कहुँ सुख राखै की दुख दहुँ कस जरम नि बाहु॥"

सखियाँ खेलती - खेलती रही, एक सखी का हार पानी, में खो गया और वह चित्त से बैसुध हो जाती है। वह अपने आप कहने लगती है - मैं इनके साथ खेलने ही क्यों आई थी। स्वयं अपने हाथों से अपना हार खो चली। घर में घुसते ही इस हार के विषय में पूछे गये तो फिर क्या उत्तर देकर प्रवेश पा सकूँगी ? उसके नेत्र रूपी सीपी में आँसू भर आते हैं। एक सखी कहती है हमारे साथ खेलने की अच्छाई है और हार खोने की बुराई भी। जीवन में अच्छाई और बुराई दोनों होते हैं।

4. पद्मावती का पारमात्मिक रूपः-

जब पद्मावती मानसरोवर में स्नान करने के लिए निकलती है तो पानी उसके पाँव छूने के लिए उछलने लगता है, जिस तरह परमात्मा का चरण छूने के लिए भक्त उभरते - ललचाते हैं। मानसरोवर ने कहा कि पारस के स्पर्श से लोहा, कंचन हो जाता है। वैसे ही उसके पैरों के स्पर्श से मैं निर्मल हो गया। उसके शरीर से मलयाचल की सुगंधि से मेरी तपन बुझ गई। मेरी दशा पुण्य की हो गई और पाप नष्ट हो गये।

चंद्रमा रूप पद्मावती की मुस्कान को देखकर कुमुदिनी रूप सखियाँ भी मुस्कराने लगी। जिस तरह भी देखो पद्मावती का रूप ही दर्शाने लगा है। जायसी कहते हैं सरोवर में कमल तो पद्मावती के नेत्र ही मानो प्रतिबिंबित कमल थे। उसका निर्मल शरीर ही मानो सरोवर में प्रतिबिंबित निर्मल जल था। उसका हास ही प्रतिबिंबित हंस थे। उसके दाँत ही मानो सरोवर में प्रतिबिंबित मग और हीरे थे।

इसमें जायसी ने परमेश्वर के बिम्ब - प्रतिबिम्ब भाव को इस प्रसंग के माध्यम से प्रकट करने का प्रयत्न किया है। पद्मावती बिम्ब है और यह सम्पूर्ण जगत उसीका प्रतिबिम्ब है।

5. उपसंहारः-

जायसी के काल में यह पता चलता है कि नारी के (सौन्दर्य) नखशिख सौन्दर्य का वर्णन होता था। उन दिनों में प्रचलिय सामाजिक परिस्थितियों में नारी के पति के घर में जीवन का स्वरूप और नारी की मनोचिंतन का विश्लेषण हुआ है। पद्मावती को इस काव्य में परमात्मा के रूप में दर्शाया गया है । स्त्री की पूजा करके नारी समाज की उन्नति करने का प्रयास किया गया है । पद्मावती रूपी पात्र से सौंदर्य की लहर के साथ - साथ परब्रह्म का भी विश्लेषण हुआ है। पारमात्मिक सत्ता पर बल दिया गया है। जायसी के विलक्षण शैली से यह काव्य हिन्दी साहित्य में विशिष्ट बना।

इस प्रकार ''पद्मावत'' काव्य में मानसरोदक खण्ड के द्वारा जायसी रहस्यवाद का प्रतिपादन करते हैं।

प्र.2. जायसी की प्रेम - व्यंजना प्रस्तुत कीजिए।

रूपरेखा :-

1. प्रस्तावना
2. जायसी का 'पद्मावत'
   - (क) कथावस्तु
   - (ख) नारी (आलंबन) सौंदर्य का वर्णन
   - (ग) उद्दीपन (प्रकृति) का वर्णन
   - (घ) प्रेमाश्रय का चित्रण
   - (ङ) संचारीभाव
   - (च) अनुभूतियाँ
   - (छ) स्थाई भाव का उत्कर्ष
3. उपसंहार

1. प्रस्तावना - भारतीय साहित्य में प्रेमाख्यानों की परम्परा :-

भारतीय साहित्य में लगभग पाँचवीं शताब्दी से एक ऐसी काव्य - परम्मपरा का प्रवर्तन हुआ, जिसमें साहस और प्रेम का चित्रण अद्‌भुत रूप में मिलता है। इस काव्य - परम्परा की आरम्भिक कृतियाँ - वासवदत्ता (सुबन्ध), कादम्बरी (बाण) और दशकुमार चरित (दंडी) हैं। प्राकृत - अपभ्रंश की तरंगवती, समरादित्य - कथा, भुवन - सुन्दरी, मलय - सुन्दरी, सुर - सुन्दरी, नागकुमार चरित, यशोधर चरित, करकंड चरित, पद्म चरित आदि में प्रेम का वही रुप उपलब्ध होता है, जो कि संस्कृत के वासवदत्ता, कादम्बरी एवं दशकुमार - चरितादि में मिलता है। आगे चलकर यही काव्य - परम्परा हिन्दी में विकसित हुई जिसे सूफी प्रेमाख्यान - परम्परा या 'निर्गुण प्रेमाश्रयी शाखा' कहा जाता है। महाकवि जायसी भी इसी काव्य - परम्परा के अन्तर्गत आते हैं।

हमारे विद्वानों का विश्वास है कि जायसी तथा अन्य प्रेमा - ख्यान - रचयिता कवियों ने अपने काव्य में अलौकिक प्रेम या रहस्यवाद की व्यंजना की हैं। इस मत के समर्थन में ये युक्तियाँ दी गई है - (१) इन कवियों ने सूफी - मत के प्रचार के लिए अपने काव्यों की रचना की। (२) इन काव्यों में आत्मा और परमात्मा के प्रेम का रूपक बाँधा गया है। (३) इनमें स्थान - स्थान पर आध्यात्मिक सिद्धान्तों एवं साधना पद्धतियों का निरूपण किया गया है। (४) इन काव्यों में नायिका (जो कि परमात्मा की प्रतीक है) के व्यक्तित्व एवं सौन्दर्य का इतने व्यापक रूप में चित्रण किया गया है कि जिससे किसी 'अनन्त सौंदर्य - सत्ता' के स्वरूप का आभास होने लगता है। (५)इनमें प्रेम और विरह का ऐसा वर्णन किया गया है कि जिसमें आध्यात्मिकता का दर्शन होने लगता है।

जायसी ने लिखा है - मैंने यह सोचकर काव्य लिखा है कि संसार में मेरा कोई स्मारक - चिन्ह रह जाय। जो लोग इस कहानी को पढ़ेंगे, वे मुझे भी याद करेंगे -

औ मैं जानि कवित अस कीन्हा।

मकु यह रहै जगत महँ चीन्हा॥

* * *

जो यह पढ़े कहानी, हम्ह सैवरै दुई बोल

पद्‌मावत के अन्त में कवि जायसी ने घोषित किया है -

प्रेम कथा एहि भांति विचारहु, बूझि लेई जौ बुझै पारहु।

इस रूपक में रत्नसेन को मन का तथा पद्मावती को बुद्धि का प्रतीक माना गया है।

रत्नसेन के सिंहलगढ़ में पहुँचने के अनन्तर भी पद्मावती को एक कामवासना एवं भोग - लिप्सा से विह्वल युवती के रूप में देखते हैं -

जोबन भर भादौं जस गंगा, लहरें देई, समाइ न अंगा।

'यौवन भार' एवं कानोन्माद का जैसा वर्णन किया गया है, उससे स्पष्ट है कि पद्मिनी का प्रेम सर्वथा लौकिक स्तर का है।

2. 'जायसी का 'पद्मावत' :-

(क) कथावस्तु :-

हिन्दी प्रेमाख्यान - काव्य - परम्परा की सर्वश्रेष्ठ रचना जायसी - कृत 'पद्मावत' मानी जाती है। इसका नायक रत्नसेन है, जो कि हीरामन तोते के मुँह से पद्मिनी के रूप सौन्दर्य की प्रशंसा सुनकर उसके प्रेम में बिह्वल हो जाता है। वह अपने घर, परिवार और देश को छोड़कर उसकी प्राप्ति के लिए निकल जाता है तथा अनेक कठिनाइयों के पश्चात् उसकी प्राप्ति में सफल हो पाता है। विवाह के अनन्तर भी पद्मिनी और रत्नसेन को कई कष्टों का सामना करना पड़ता है। अन्त में दिल्ली सुलतान अलाउद्दीन से युद्ध करता हुआ रत्नसेन वीरगति को प्राप्त हो जाता है और पद्मिनी सती हो जाती है। इस काव्य में श्रृंगार रस के सभी अवयवों एवं अनेक दशाओं का मार्मिक वर्णन उपलब्धहोता है।

(ख) नारी (आलम्बन) सौन्दर्य का वर्णन :-

नारी - सौन्दर्य के चित्रण में जायसी ने परम्परागत नख - शिख - वर्णन की शैली का प्रयोग किया है। उन्होंने नारी रूप के सामूहिक प्रभाव की व्यंजना की अपेक्षा उसके अंग - प्रत्यंग का अलग - अलग वर्णन किया है। वे अपनी सूक्ष्म पर्यवेक्षण - शक्ति के बल पर प्रत्येक अवयव की बाह्य एवं आन्तरिक विशेषताओं का उद्घाटन कुशलतापूर्वक कर देते हैं; यथा केशों का एक वर्णन देखिए -

भँवर केस, वह मालति रानी। विसहर लुरहि लेहि अरघानी।

बैनो छोरि झारु जौं बार। सरग पतार होइ अंधियारा॥

यहाँ केशों की श्याम - वर्णता, वक्रता, सुगन्धि एवं मनमोहकता आदि सभी गुणों की व्यंजना भ्रमर, विषधर, अन्धकार, मलयगिरि और श्रृंखला आदि उपमानों की सहायता से कर दी गई है।

वस्तु के सूक्ष्मातिसूक्ष्म चित्रण के जायसी के सौन्दर्य - वर्णन में कुछ प्रवृत्तियाँ और मिलती हैं। एक तो उन्हें वर्णन - विस्तार से इतना अधिक प्रेम है कि उनका नख - शिख - वर्णन एक पूरे सर्ग का रूप ले लेता है। दूसरे, वे अत्युक्तियों एवं अतिशयोक्तियों का अधिक प्रयोग करते हैं।

सुन्दरियों के रूप के प्रभाव सिद्ध करने के लिए भी वे द्रष्टा के आहत हो जाने मूर्च्छित हो जाने, या प्राण त्याग देने की कल्पना बारम्बार करते हैं। फिर भी सौन्दर्य की व्यंजना उनके काव्य में वर्णन के रूप में ही अधिक होती है। एक - एक अंग का अलग - अलग विखरा हुआ सौन्दर्य किसी समन्वित प्रभाव की पुष्टि नहीं करता, उनकी अत्युक्तियाँ

आश्चर्यजनक होते हुए भी पाठकों के हृदय को तरंगित करने में असमर्थ हैं और उनका विस्तृत वर्णन उभार देनेवाला सिद्ध होता है। नारी की सूक्ष्म चेष्टाओं एवं मधुर भाव - भंगिमाओं का चित्रण भी उनके काव्य में बहुत कम हुआ है।

(ग) उद्दीपन (प्रकृति) का वर्णन :-

श्रृंगारोद्दीपन के लिए भी जायसी ने ऋतु - वर्णन एवं बारहमासा - कथन की परम्परागत शैलीयों का व्यवहार किया है, फिर भी उनकी कुछ निजी विशिष्टताएँ हैं। संयोग में समय शीघ्र बीत जाता है, किन्तु विरह के क्षण लम्बे होते हैं, अतः जायसी ने दोनों के लिए क्रमशः ऋतु - वर्णन और बारहमासा - वर्णन का आयोजन करके सूक्ष्म बुद्धि का परिचय दिया है।

उदाहरणस्वरूप कुछ पंक्तियाँ देखिए -

रितु पावस बरसौ, पिउ पावा। सावन भादों अधिक सुहावा॥

कोकिल बैन, पाँत बग छूटी। गनि निसरि जेउँ बीरबहूटी॥

संयोगकालीन दृश्यों के चित्रण में कवि के प्रत्येक शब्द से उल्लास की अभिव्यक्ति होती थी, वहाँ उपर्युक्त वर्णन में वातावरण की कठोरता को ऐसे शब्दों में उपस्थित किया गया है कि पाठक का हृदय अनुभूति से ओत - प्रोत हो जाता है। वस्तुतः जायसी का प्रकृति - वर्णन कल्पना और अनुभूति के सुन्दर सामंजस्य से पूर्ण है और वह स्थायीभाव की व्यंजना के अनुरुप पृष्ठभूमि तैयार करने में पूर्णतः समर्थ है।

(घ) प्रेमाश्रय का चित्रण :-

पद्मावत में प्रणय - भावना का आश्रय प्रारम्भ में केवल नायक ही रहता है, जो अपने प्रयत्नों से नायिका के हृदय को भी जीत लेने में सफलता प्राप्त कर लेता है। यद्यपि तोते के मुख से नख - शिख - वर्णन सुनकर रत्नसेन की सौन्दर्यानुभूतियों की व्यंजना अत्यन्त मार्मिक रूप में हुई है।

फूल फूल फिरि पूँछों, जो पहुँचों आहिं केत।
तन निछावर के मिलों, ज्यों मधुकर जिउ देंत॥

(ङ) संचारी भाव :-

श्रृंगाररस के क्षेत्र में रति और निर्वेद जैसे दो विरोधी संचारी भावों की स्थिति एक साथ संभव होती है। रत्नसेन के हृदय में भी प्रणय की गम्भीरता के साथ ही वैराग्य की सृष्टि हो जाती है और वह अपना सब कुछ त्यागकर घर से निकल जाता है।

तजा राज राडा भा जोगी। ओ किंगरो कर गहेउ वियोगी।
तन विसंभर मन बाउर रटा। अरुझा प्रेम परी सिर जटा॥

रत्नसेन का यह निर्वेद संयोग होने तक बराबर प्रणय भावना के साथ चलता रहता है। इसके अतिरिक्त संचारी भावों की भी योजना कवि ने अवसरानुभूति सफलता - पूर्वक की है।

(च) अनुभूतियाँ :-

पद्मनी की प्रेमानुभूतियाँ - पद्मनी में हम प्रेमानुभूतियों का विकास क्रमिक रूप में पाते हैं। प्रारम्भ में वह काम - वेदना से पीड़ित है -

सुनु हीरामन कहों बुझई, दिन - दिन मदन आई सतावै।

:::::::::::::

जोवन मोर भयउ जस गंगा, देह - देह हम्ह लाग अनंगा॥

आगे चलकर रत्नसेन के दर्शन के अनन्तर उसकी यह काम - वासना प्रेम में परिणत हो जाती है और जब वह सुनती है कि उसका प्रियतम उसी के लिए शूली पर चढ़ रहा है तो उसके हृदय का अणु - अणु पिघलकर मानवता के रूप में बहने लगता है।

संयोगानुभूतियाँ - जायसी ने नायक - नायिका की संयोगानुभूतियों की अभिव्यक्ति के लिए प्रथम समागम, हास - परिहास, शतरंज - चौपट के मनोरंजन, सुरत एवं सुरतान्त आदि का विस्तृत वर्णन किया है। विवाह के अनन्तर प्रथम रात्रि में प्रियतम के पास जाती हुई पद्मावती की हृदय - दशा का परिचय उसके इन शब्दों में मिलता है -

अनचिन्ह पिउ काँपे न माहाँ, का मैं कहब गहब जब बाँहाँ।

जब रत्नसेन अपने प्रेमपूर्ण शब्दों से उसका भय और संकोच दूर कर देता है तो वह भी अपना कृत्रिम भोलापन प्रदर्शित करती हुई अपनी हास - परिहासमयी उक्तियों से छेड़ - छाड़ करने लगती है -

अपने मुँह न बढ़ाई छाजा, जोगो कतहुँ न होहि नाहि राजा।

(छ) स्थायीभाव का उत्कर्ष - पद्मावत में प्रेम - भावना के प्रादुर्भाव के सम्बन्ध में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि उसमें नायक और नायिका में प्रेम का विकास एक साथ नहीं होता। दोनों के प्रेम प्रवृत्ति एवं गति में भी पर्याप्त भेद है। रत्नसेन प्रेम के आदर्श स्वरूप को उपस्थित करता है, जबकि पद्मावती ने यथार्थ एवं व्यावहारिक रूप का लोभ - मात्र सिद्ध किया है।

पद्मावती की प्रणय - भावना में हम क्रमिक विकास पाते हैं। परिस्थितियों के अनुसार उसमें प्रेम, कामुकता और रसिकता की सीमा को पार करके अपने विशुद्ध एवं गम्भीर स्वरूप को प्राप्त कर लेता है, जो मनोवैज्ञानिक एवं व्यावहारिक दृष्टि से बहुत संगत है। अपने विकास की चरमावस्था में आदर्श प्रेम और यथार्थ प्रेम दोनों एक स्तर पर पहुँच जाते हैं। पद्मावती की प्रणय - भावना अन्त में साहस, त्यागादि के सभी गुणों से समन्वित हो जाती है, जो रत्नसेन में हम प्रारम्भ से ही पाते हैं।

रत्नसेन और पद्मावती के प्रणय - सम्बन्ध के कारण नागमती का कष्ट - भोग और विवाह के अनन्तर दोनों सपत्नियों की ईर्ष्या, कलह आदि देखकर कदाचित् कुछ लोग उनके प्रेम को अश्रद्धा की दृष्टि से देखें, अतः इस दुष्टि से विचार करना आवश्यक है। कवि ने आरम्भ में नागमती को रूप - गर्विता एवं तोते की हत्या में प्रयत्नशील दिखाकर पाठक की सहानुभीति के मार्ग में अवरोधक लगा दिया है। अतः उसके प्रति राजा का निष्ठुर व्यवहार उचित प्रतीत होता है। नागमती का दारुण विरह अवश्य हृदयद्रावक है, किन्तु रत्नसेन उसका संदेश प्राप्त होते ही लौट जाता है। सपत्नियों की प्रारम्भिक गुह - कलह भी स्वाभाविक है, जो आगे परिस्थितियों की कठिनता से शान्त हो जाती है।

3. **उपसंहार :-** वस्तुतः इस काव्य में प्रेम को आदर्श और यथार्थ - दोनों गुणों से समन्वित करते हुए उसे पूर्ण उत्कर्ष तक पहुँचा दिया गया है। बिना साहस और त्याग के प्रेम पूर्ण गम्भीरता को प्राप्त करने में असमर्थ रहता है। प्रेम का यह आदर्श भारतीय साहित्य में मुख्यतः प्रेमाख्यानों में पूर्ण शब्दों में व्यंजना करने की दृष्टि से जायसी हिन्दी के सर्वोत्कृष्ट कवि सिद्ध होते हैं ।

प्र.3. पद्मावत में व्यक्त रहस्यवाद पर प्रकाश डालिए।

अथवा

पद्मावत के आधार पर जायसी कृत रहस्यवाद की चर्चा कीजिए।

रूपरेखा :-

1. प्रस्तावना
2. अद्वैतवाद की परिणति : रहस्यवाद
3. सूफी संप्रदाय तथा रहस्यवाद
4. जायसी और रहस्यवाद
5. पद्मावत में व्यक्त रहस्यवाद
6. अन्तर्जगत तथा बाह्य जगत : बिंब - प्रतिबिंब भावना
7. अमरधाम
8. उपसंहार